Arousal Theory

इस Theory को Activation theory भी कहा जाता है। इसमें sustained attention की व्याख्या Neurophysiological ~~theory~~ evidence के रूप में की गयी है। इन सबूतों का आधार Hebb का योगदान है जिन्होंने यह स्पष्टतः कहा कि संवेदी निवेश के मुख्य दो कार्य होते हैं —

(1) इस तरह के संवेदी निवेश से मस्तिष्क को वातावरण के बारे में कुछ सूचना मिलती है तथा दूसरा यह कि इससे मस्तिष्क में कुछ अस्पष्ट एवं विसरित क्रियाएँ होती हैं जिनसे सतर्कता के स्तर में वृद्धि होकर प्रभावित व्यवहार होता है।

इस सिद्धांत के अनुसार जागरूकता कार्य में Reticular formation की विशेष भूमिका होती है। ~~RFS~~ शरीर विज्ञान में उत्तेजना का तात्पर्य मस्तिष्कीय क्रिया की उच्च या उत्तेजित अवस्था से है। निम्न मस्तिष्कीय संरचनाओं विशेष रूप से Reticular formation अथवा Reticular activation formation के द्वारा की गयी महत्वपूर्ण के फलस्वरूप संवेदी ग्राहकों से उत्पन्न

तन्त्रिकीय संरचनाएँ उत्तेजित हो जाती हैं। यही उत्तेजन या सक्रियण प्रक्रिया दीर्घीकृत अवधान का आधार बन जाती है। इसी आधार पर उत्तेजन सिद्धांत को सक्रियण सिद्धांत भी कहा जाता है।

इस सिद्धांत के अनुसार Reticular formation के अपेक्षित स्तरीय कार्य के लिए यह आवश्यक है कि उद्दीपन में पर्याप्त परिवर्तनशीलता हो। इसी आधार पर दीर्घीकृत अवधान की व्याख्या संभव होती है। जब उद्दीपन की परिवर्तनशीलता विवेचित स्तर से नीचे होता है तो व्यक्ति में उत्तेजनशीलता का स्तर नीचा हो जाता है और दीर्घीकृत अवधान में ह्रास हो जाता है। इसके विपरीत जब उद्दीपन की परिवर्तनशीलता का स्तर विवेचित स्तर से ऊपर होता है तो दीर्घीकृत अवधान में वृद्धि होती है।

Merits - इस सिद्धांत का एक गुण यह है कि इसके पक्ष में बहुत सारे प्रमाण उपलब्ध हैं। ब्रेविज तथा कोरकोविक ने अपने अध्ययन में पाया कि सतर्कता कार्य की पहचान की क्रिया व्युरोदैहिक क्रिया तथा गैल्वेनिक त्वक क्रिया (GSR) से संबंधित है। मिलोसेविक 1975 ने अपने अध्ययन में पाया कि GSR तथा संकेत पहचान के बीच समानान्तरण पाया जाता है। ये सभी

Date
Page

परिणाम उत्तेजन सिद्धांत के पक्ष में है।

Criticisms

कई आधारों पर इसकी आलोचनायें भी की गयी है।

(i) यह सिद्धांत इस बात को स्पष्ट करने में असफल है कि दीर्घीकृत अवधान के समय व्यक्ति के निष्पादन को बेहतर बनाने के लिए कितनी मात्रा में बाह्य उत्तेजन अपेक्षित है।

(ii) इस सिद्धांत की अभिधारणाओं की असंगति इस सिद्धांत के आलोचनाओं का दूसरा आधार है। एक अध्ययन में देखा गया कि साधारण उत्तेजन के घटित होने पर सतर्कता कार्य बेहतर बन गया जबकि दूसरे अध्ययन से पता चला कि धारण उत्तेजन की स्थिति में सतर्कता कार्य में ह्रास घटित हुआ। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह सिद्धांत भी दीर्घीकृत अवधान की संतोषजनक व्याख्या करने में केवल आंशिक रूप से ही सफल है।